विश्व मधुमेह दिवस

drishtiias.com/hindi/printpdf/world-diabetes-day

प्रीलिम्स के लिये:

विश्व मधुमेह दिवस, विश्व स्वास्थ्य संगठन

मेन्स के लिये:

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मधुमेह रोगियों तक इंसुलिन की पहुंच बढ़ाने के प्रयास

चर्चा में क्यों?

14 नवंबर 2019 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व मधुमेह दिवस के अवसर पर

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मधुमेह रोगियों तक इंसुलिन की पहुँच सुनिश्चित करने के लिये एक कार्यक्रम प्रारंभ किया है।

मुख्य बिंदु:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization-WHO) ने 14 नवंबर, 2019 को विश्व मधुमेह दिवस के अवसर पर निम्न और मध्यम आय वाले देशों में मधुमेह पीड़ितों की इंसुलिन तक आसान पहुँच स्थापित करने के लिये एक नए कार्यक्रम की घोषणा की है।
- इस कार्यक्रम से विश्व में लगभग 420 मिलियन व्यक्ति लाभान्वित होंगे।
- मधुमेह से संबंधित वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार, गरीब देशों में प्रत्येक 3 में से 1 मधुमेह रोगी की ही आसान उपचार और इंसुलिन तक पहुँच है।
- इस रिपोर्ट में सिफारिश की गई है कि मधुमेह रोगी तक इंसुलिन की पहुँच को जीवन या मृत्यु से संबंधित मामला माना जाना चाहिये और सामान्य रूप से मधुमेह पीड़ितों तक इंसुलिन की पहुँच में सुधार करने को प्राथमिकता देनी चाहिये।
- इंटरनेशनल डायबिटीज़ फेडरेशन डायबिटीज़ एटलस (International Diabetes Federation Diabetes Atlas) के सातवें संस्करण के अनुसार, वर्ष 2017 में चीन में मधुमेह से प्रभावित रोगियों की संख्या सर्वाधिक 11.43 करोड़ थी जबकि दूसरे स्थान पर भारत (7.29 करोड़) में सर्वाधिक मधुमेह प्रभावित रोगी थे।
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (National Family Health Survey), 2015-16 के अनुसार, भारत में 15-49 वर्ष आयु वर्ग की 5.8% महिला तथा 8% पुरुष मधुमेह रोगियों में रक्तशर्करा का स्तर 140 mg/dl से भी अधिक है।
- मधुमेह में वृद्धि के लिये अस्वास्थ्यवर्द्धक आहार, शारीरिक गतिविधियों की कमी, अल्कोहल का उपयोग, मोटापा तथा तंबाकू का उपयोग प्रमुख रूप से ज़िम्मेदार है।

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा उच्च रक्त शर्करा स्तर वाले रोगियों की जीवन शैली एवं व्यवहार में परिवर्तन लाने, तीव्र जाँच और निदान तथा अन्य गैर संक्रामक रोगों के उपचार के उपयुक्त प्रबंधन के लिये जागरूकता फैलाई जा रही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रारंभ किया गया कार्यक्रम:

- WHO द्वारा विश्व मधुमेह दिवस के अवसर पर पहली बार इंसुलिन प्रीक्वालिफिकेशन (Prequalification) कार्यक्रम को पायलट कार्यक्रम के रूप में प्रारंभ किया गया है।
- WHO के अनुसार, विश्व में टाइप-2 मधुमेह से पीड़ित लगभग 65 मिलियन व्यक्तियों में से आधे व्यक्तियों की ही इंसुलिन तक पहुँच है। मधुमेह टाइप-1 से पीड़ित रोगियों को जीवित रहने के लिये जीवन भर इंसुलिन की आवश्यकता होती है।
- WHO के अनुमान के अनुसार, इंसुलिन प्रीक्वालिफिकेशन (Prequalification) कार्यक्रम के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में गुणवत्तापूर्ण उत्पादों का प्रसार करके तथा विभिन्न देशों को इंसुलिन उत्पादों के अधिक से अधिक विकल्प उपलब्ध कराकर मधुमेह रोगियों को कम कीमत पर इंसुलिन उपलब्ध कराना है। वर्तमान में इंसुलिन की पर्याप्त आपूर्ति के बावजूद निम्न और मध्यम आय वाले देशों में इंसुलिन की कीमतें मधुमेह के उपचार में सबसे बड़ी बाधक हैं।

इन्सुलिन तक पहुँच: एक चुनौती

- WHO द्वारा वर्ष 2016-2019 के दौरान 4 महाद्वीपों के 24 देशों से एकत्रित किये गए आँकड़े यह दर्शाते हैं कि मानव इंसुलिन केवल 61% स्वास्थ्य सुविधाओं तथा एनालॉग (प्रयोगशाला आधारित) इंसुलिन 13% स्वास्थ्य सुविधाओं के लिये उपलब्ध है।
    - इन आँकड़ों के अनुसार, घाना की राजधानी एक्रा (Accra) में एक मधुमेह रोगी के लिये इंसुलिन की मासिक आपूर्ति की कीमत एक श्रमिक के 5.5 दिनों के वेतन (कुल आय के 22.5%) के बराबर है।
    - विश्व में 420 मिलियन से अधिक व्यक्ति मधुमेह से ग्रसित हैं। यह विश्व में होने वाली मौतों का सातवाँ प्रमुख कारण तथा दिल का दौरा, किडनी फेलर (Kidney Failure) जैसी दुर्बल समस्याओं का भी प्रमुख कारण है।
    - टाइप-1 मधुमेह रोगियों को जीवित रहने के लिये इंसुलिन की आवश्यकता पड़ती है तथा अंधापन और किडनी फेल्यर जैसे रोगों से बचने के लिये अपने रक्त शर्करा स्तर को कम स्तर पर बनाए रखना पड़ता है। वहीं टाइप-2 मधुमेह रोगियों को ओरल (Oral) दवाओं का प्रभाव नहीं होने पर अपने रक्त शर्करा स्तर को नियंत्रित करने के लिये इंसुलिन की आवश्यकता होती है।
- WHO इस कार्यक्रम के माध्यम से मधुमेह के उपचार से संबंधित दिशा-निर्देशों को अद्यतन करेगा तथा एनालॉग इंसुलिन के मूल्य में कमी की रणनीति बनाकर इंसुलिन वितरण प्रणाली को सशक्त करेगा।
- यह कार्यक्रम निर्माताओं द्वारा विकसित चिकित्सा उत्पादों का मूल्यांकन कर उनकी गुणवत्ता, प्रभावकारिता और सुरक्षा को सुनिश्चित करके गुणवत्तापूर्ण दवाओं को उपलब्ध कराता है।
- यह कार्यक्रम ग्लोबल फंड, गावी (The Global Alliance for Vaccines and Immunizations-GAVI), वैक्सीन अलायंस (Vaccine Alliance) और यूनिसेफ जैसी संस्थाओं को स्वास्थ्य उत्पादों के मूल्यांकन तथा प्रीक्वालिफिकेशन (Prequalification) के लिये मार्गदर्शन देता है।

इंसुलिन प्रीक्वालिफिकेशन कार्यक्रम, WHO द्वारा मधुमेह की समस्या से निपटने के लिये आने वाले वर्ष में उठाए जाने वाले कदमों में से एक है।

स्रोत-द हिंदू